

## श्रीगणेशपराधक्षमापनस्तोत्रम्

{॥ श्रीगणेशपराधक्षमापनस्तोत्रम् ॥}

श्रीगणेशाय नमः ।

सुमूखो मखभुङ्खुर्थार्चितः सुखवृद्धेय निखिलातिशान्तये ।

अखिलश्रुतिशीर्षवर्णितः सकलाद्यः स सदाहस्तु मे हृदि ॥ १ ॥

प्रणवाकृतिमस्तके नयः प्रणवो वेदमुखावसानयोः ।

अयमेव विभाति सुस्फुटं ह्यवतारः प्रथमः परस्य सः ॥ २ ॥

प्रथमं गुणनायको बभौ त्रिगुणानां सुनियन्त्रणाय यः ।

जगद्ध्रुवपालनात्ययेषुजबिम्बिषसुरप्रणोदकः ॥ ३ ॥

विधिविष्णुहरेन्द्रदेवतादिगणानां परिपालनाद्विभूः ।

अपि चेन्द्रियपुङ्खुचालनाक्षणनाथः प्रथितोऽर्थतः स्फुटम् ॥ ४ ॥

अणिमामुखसिद्धिनायका भजतः साधयतीष्टकामनाः ।

अपवर्गमपि प्रभूर्धियो निजदासस्य तमो विहत्य यः ॥ ५ ॥

जननीजनकः सुखप्रदो निखिलानिष्टहरोऽखिलेष्टदः ।

गणनायक एव मामवेद्रदपाशाङ्कुशमोदकान् दधत् ॥ ६ ॥

शरणं करुणार्णवः स मे शरणं रक्ततनुश्चतुर्भुजः।

शरणं भजकास्तुरायहा शरणं मङ्गलमूर्तिरस्तु मे ॥ ९ ॥

सततं गणनायकं भजे नवनीताधिककोमलान्तरम्।

भजनान्द्रवभीतिभङ्गनं स्मरणाद्विघ्ननिवारणक्षमम् ॥ ८ ॥

अरुणारुणवर्णराजितं तरुणादित्यसमप्रभं प्रभुम्।

वरुणायुधमोदकावहं करुणामूर्तिमहं प्रणौमि तम् ॥ ९ ॥

क्व नु मूषकबाहनं प्रभुं मृगये द्रुततमोऽवनीतले।

विवुधास्तु पितामहादयस्त्रिभु लोकेषुपि यं न लेभिरे ॥ १० ॥

शरणागतपालनोऽसुकं परमानन्दमजं गणेश्वरम्।

वरदानपटुं कृपानिधिं हृदयाङ्गे निदधामि सर्वदा ॥ ११ ॥

सुमुखे विमुखे सति प्रभौ न महेंद्रादपि रक्षणं कदा।

द्वयि हस्तिमुखे प्रसन्नताहतिमुखेनापि यमाद्वयं भवेत् ॥ १२ ॥

सुतरां हि जडोऽपि पण्डितः खलु मूकोऽप्यतिवाक्पतिर्भवेत्।

गणराजदयार्द्रवीक्षणदपि चाङ्गः सकलज्जातामियात् ॥ १३ ॥

अमृतं तु विषं विषं सुधा परमाणुस्तु नगो नगोऽप्यणुः।

কুলিশং তু তৃণং তৃণং পবির্গণনাথাশু তবেচ্ছয়া ভবেত্ ॥ ১৪ ॥

গতোহসি বিভো বিহায মাং ননু সর্বজ্ঞ ন বেৎসি মাং কথম্।  
কিমু পশ্যসি বিশ্বদৃগ্ ন মাং ন দয়া কিমপি তে দয়ানিধে ॥ ১৫ ॥

অযি দীনদয়াসরিংপতে মযি নৈষ্ঠূর্যমিদং কুতঃ কৃতম্।  
নিজভক্তিসুখালবোহপি যন্ন হি দত্তো জনিমৃত্যুমোচকঃ ॥ ১৬ ॥

নিতরাং বিষয়োপভোগতঃ ক্ষপিতং ত্বায়ুরমূল্যমেনসা।  
অহহাজ্ঞতমস্য সাহসং সহনীয়ং কৃপয়া ত্বয়া বিভো ॥ ১৭ ॥

ভগবন্নহি তারকস্য তে বত মন্ত্রস্য জপঃ কৃতস্তথা।  
ন কদৈকধিয়াপি চিন্তনং তব মূর্তেষ্টু মযাতিপাপ্মনা ॥ ১৮ ॥

ভজনং ন কৃতং সমর্চনং তব নামস্মরণং ন দর্শনম্।  
হবনং প্রিয়মোদকার্পণং নবদূর্বা ন সমর্পিতা মযা ॥ ১৯ ॥

নচ সাধুসমাগমঃ কৃতস্তব ভক্তাশ্চ মযা ন সংকৃতাঃ।  
দ্বিজভোজনমপ্যকারি নো বত দৌরাভ্যামিদং ক্ষমস্ব মে ॥ ২০ ॥

ন বিধিং তব সেবনস্য বা নচ জানে স্তবনং মনুং তথা।  
করযুগ্মশিরঃসুযোজনং তব ভূযাঙ্গণনাথপূজনম্ ॥ ২১ ॥

অথ কা গণনাথ মে গতির্নহি জানে পতিতস্য ভাবিনী।

ইতি তপ্ততনুং সদাহব মামনুকম্পাদ্রকটাক্ষবীক্ষণৈঃ ॥ ২২ ॥

ইহ দণ্ডধরস্য সঙ্গমেহখিলধৈর্যচ্যবনে ভযঙ্করে।

অবিতা গণরাজ কো নু মাং তনুপাতাবসরে ত্বয়া বিনা ॥ ২৩ ॥

বদ কং ভবতোহন্যমিষ্টদাচ্ছরণং যামি দযাধনাদৃতে।

অবনায ভবাগ্নিভজিতো গতিহীনঃ সুখলেশবর্জিতঃ ॥ ২৪ ॥

শ্রুতিমৃগ্যপথস্য চিন্তনং কিমু বাঢ়োহবিষয়স্য সংস্তুতিম্।

কিমু পূজনমপ্যনাকৃতেরসমর্থো রচয়ামি দেবতে ॥ ২৫ ॥

কিমু মদ্বিকলাংস্বসেবনং কিমু রজ্জ্বাদুপচারবৈভবম্।

জডবাঙ্গতিতো নিজস্তুতিং গণনাথেচ্ছসি বা দযানিধে ॥ ২৬ ॥

অধুনাপি চ কিং দযা ন তে মম পাপাতিশযাদিতীশ চেত্।

হৃদযে নবনীতকোমলে ন হি কাঠিন্যানিবেশসম্ভবঃ ॥ ২৭ ॥

ব্যসনাদিতসেবকস্য মে প্রণতস্যাশু গণেশ পাদযোঃ।

অভযপ্রদহস্তপঙ্কজং কৃপয়া মূর্ণি কুরুষু তাবকম্ ॥ ২৮ ॥

জননীতনয়স্য দ্রুপথং মুহুরেতি প্রসভং দযাদ্রধীঃ।

मम दृग्विषयस्तथैव तो गणनाथांशु भवनुकम्पया ॥ २९ ॥

गजराजमुखाय ते नमो मृगराजोत्तमबाहनाय ते।

द्विजराजकलाभूते नमो गणराजाय सदा नमोऽस्तु ते ॥ ३० ॥

गणनाथ गणेश विघ्नराट् शिवसूनो जगदेकसद्गुरो।

सूरमानुषगीतमद्यशः प्रणतं मामव संसृतेर्भयात् ॥ ३१ ॥

जय सिद्धिपते महामते जय बुद्धीश जडार्तसद्गते।

जय योगिसमूहसद्गुरो जय सेवारत कल्लनातरो ॥ ३२ ॥

तनुवाग् हृदयैरसक्त सद्यदनस्थान्नित्रितये कृतं मया।

जगदीश करिष्यमाणमप्यथिलं कर्म गणेश तेऽर्पितम् ॥ ३३ ॥

इति कृष्णमुखोद्गातं स्तवं गणराजस्य पुरः पठेन्नरः।

सकलाधिविबर्जितो भवेत्सूतदारादिसुखी स मुक्तिभाक् ॥ ३४ ॥

इति मुद्गलपुराणस्तविति श्रीगणेशापराधक्षमापणस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Encoded by Karthik Chandan.P (kardan5380@yahoo.com)

and Amith K Nagaraj (amithkn@rediffmail.com)

Proofread by Ravin Bhalekar ravibhalekar@hotmail.com

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

Last updated त्oday

<http://sanskritdocuments.org>

Ganesha Aparadha Kshamapana Stotram Lyrics in Bengali PDF

% File name : shrIgaNeshaaparAdhaxamApanastotram.itx

% Category : aparAdhakShamA

% Location : doc\\_ganesha

% Author : Traditional

% Language : Sanskrit

% Subject : philosophy/hinduism/religion

% Transliterated by : Karthik Chandan.P (kardan5380 at yahoo.com) : Amith K Nagaraj)

% Proofread by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com

% Description-comments : mudgalapurANe

% Latest update : September 17, 2004

% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

% Site access : <http://sanskritdocuments.org>

%

% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study

% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of

% any website or individuals or for commercial purpose without permission.

% Please help to maintain respect for volunteer spirit.

%

We acknowledge well-meaning volunteers for [Sanskritdocuments.org](http://Sanskritdocuments.org) and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.

Please check their sites later for improved versions of the texts.

This file should strictly be kept for personal use.

PDF file is generated [ October 12, 2015 ] at [Stotram](http://Stotram) Website